चींटा

और

अन्तरिक्ष यात्री

अ. मित्यायेव

चींटा

और

अन्तरिक्ष यात्री

अ. मित्यायेव

हिन्दी रूपान्तर : वीना
आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

ISBN 978-81-89719-06-7

मूल्य : 35 रुपये

पहला संस्करण : जनवरी, 2010

प्रकाशक

अनुराग ट्रस्ट

डी-68, निरालानगर

लखनऊ-226020

टाइपसेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन

मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

Cheenta aur Antariksh Yatri, ***Story by A. Mityayev***

चींटा और अन्तरिक्ष यात्री

मुराश्का, एक छोटा लाल चींटा, टहनियों से बनी बाड़ के किनारे एक चींटों की बाँबी में रहता था। बाड़ के एक तरफ कद्दुओं का खेत, और दूसरी तरफ – एक सड़क थी। प्रतिदिन भोर में एक दूध की गाड़ी वहाँ से गुज़रती थी। यह एक भारी गाड़ी थी। जब यह गुज़रती, तो चींटों की पूरी बाँबी हिल जाती थी। मुराश्का को सोना बहुत अच्छा लगता था, लेकिन वह कैसे सो सकता था जब उसके घर की दीवारें हिलती हों जैसे कि भूकम्प आ गया हो। इसलिए उसे सूरज उगने से पहले उठकर, अपने अगले पैरों से आँखें मलकर, बेल्ट कसते हुए भागकर काम पर जाना पड़ता था।

उसका काम बहुत मामूली क़िस्म का था : भोजवृक्ष के नीचे इल्लियों को पकड़ना और उन्हें

भण्डार में लाना।

एक दिन सुबह मुराश्का रोज़ की तरह भागते हुए भोजवृक्ष के पास पहुँचा, और थोड़ा आराम करने के लिए नीचे बैठा। वह रेशमी धागे से लटकती हुई एक हरी इल्ली को खोजने लगा मगर उसे कोई इल्ली दिखायी नहीं दी। तभी उसने देखा कि एक विशाल सूरज आसमान से गिर रहा है।

मुराश्का का डर के मारे बुरा हाल हो गया उसे लगा कि सूरज उसे जला देगा।

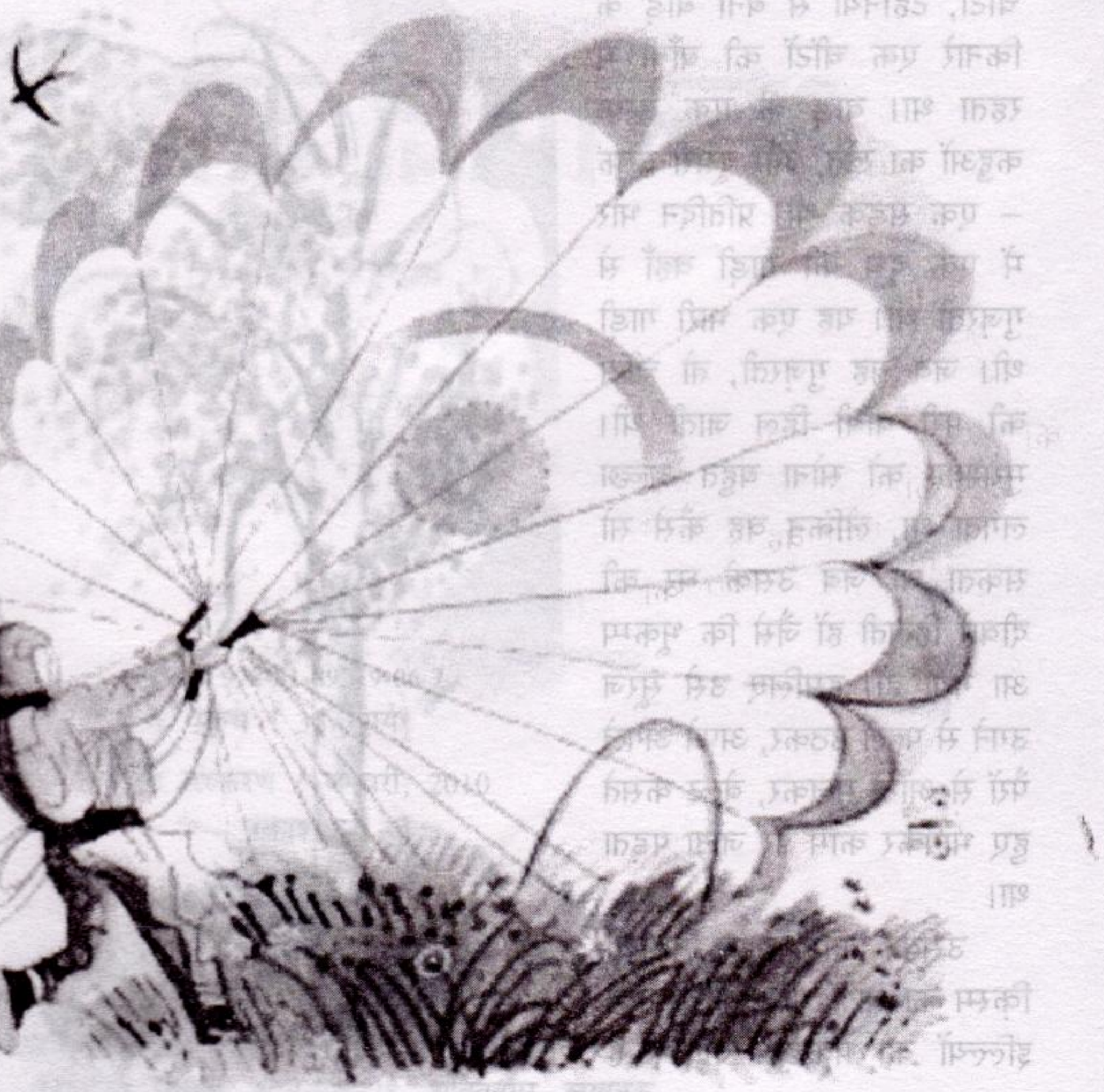

वह भाग जाना चाहता था, और वह भाग सकता था लेकिन अचानक उसने सूरज के बीच में एक आदमी को देखा। मुराश्का ने उसकी अन्तरिक्ष पोशाक और हेलमेट से उसे एक बार में ही पहचान लिया। यह एक अन्तरिक्ष यात्री था, जिसके सिर के ऊपर नारंगी रंग का पैराशूट फड़फड़ा रहा था।

अन्तरिक्ष यात्री नीचे आया, अपने पैराशूट के फीतों को खोला, अपना हेलमेट उतारा और भोजवृक्ष के नीचे बैठ गया।

"हैलो भोजवृक्ष!" उसने कहा, और पत्तों की एक टहनी को हाथ में लेकर चूम लिया।

मुराश्का को यह कुछ अच्छा नहीं लगा। एक भोजवृक्ष से काल्पनिक "हैलो" कहना जबकि एक जीता-जागता चींटा बात करने के लिए सामने था। "ऐसा इसलिए है कि

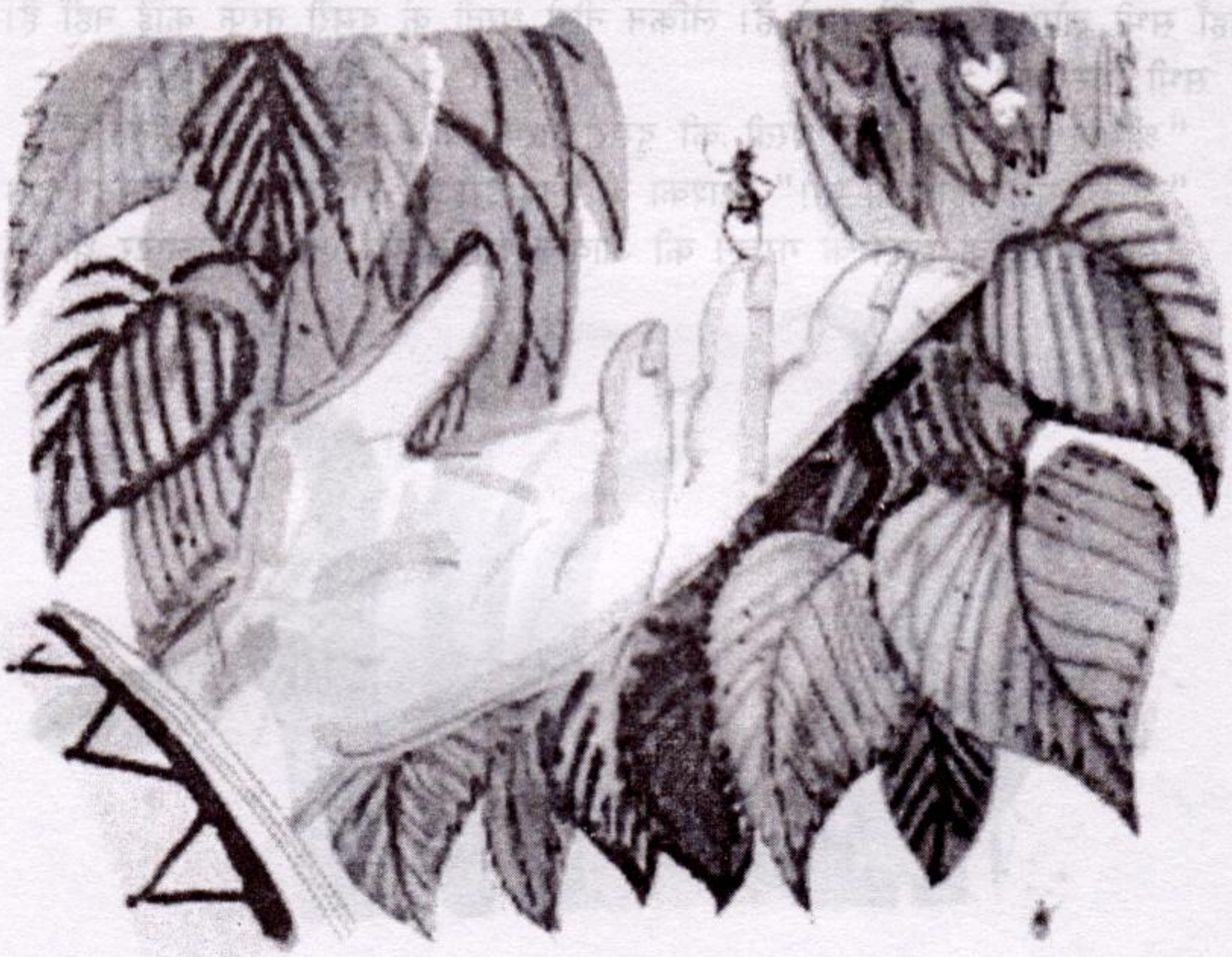

5 /चींटी और अन्तरिक्ष यात्री

उसने मुझे देखा नहीं," मुराश्का ने सोचा। अपनी अदरकी मूँछों को मरोड़कर वह अन्तरिक्ष यात्री के जूते पर रेंगकर चढ़ गया। जूते से दौड़कर वह उसके पैर पर चढ़ गया, फिर उसकी आस्तीन पर, फिर उसकी तर्ज़नी उँगली पर चढ़ा।

अन्तरिक्ष यात्री मुराश्का को देखकर मुस्करा दिया।

"सुप्रभात, श्रीमान चींटा जी। आप इतनी सुबह-सुबह क्यों जाग गये? व्यापार के चक्कर में?"

"आप ठीक कह रहे हैं," मुराश्का ने लजाते हुए जवाब दिया। "लेकिन कृपा करके मुझे बताइये कि क्या यह सच है कि पृथ्वी कद्दू की तरह गोल है?"

"बिल्कुल सच है," अन्तरिक्ष यात्री ने जवाब दिया। मैं कुछ समय पहले ही हमारी इस धरती से लम्बी दूरी पर था। वहाँ से यह गोल दीख रही थी।"

"हम लोग यहाँ ऊपर रहें यही सही है," मुराश्का ने कहा। "यही वह जगह है जहाँ सभी लोग और चींटे रहते हैं। लेकिन नीचे धरती के दूसरी तरफ़ कोई नहीं है। त्रे सभी गिर जाते हैं।"

"श्रीमान चींटे जी, वहाँ धरती की दूसरी तरफ़ भी चींटे और लोग रहते हैं।"

"अच्छा मुझे नहीं पता था!" मुराश्का के लिए इस पर विश्वास करना कठिन था।

उसी समय एक इंजन के गरज़ने की आवाज़ आयी। यह एक हेलीकाप्टर था जो

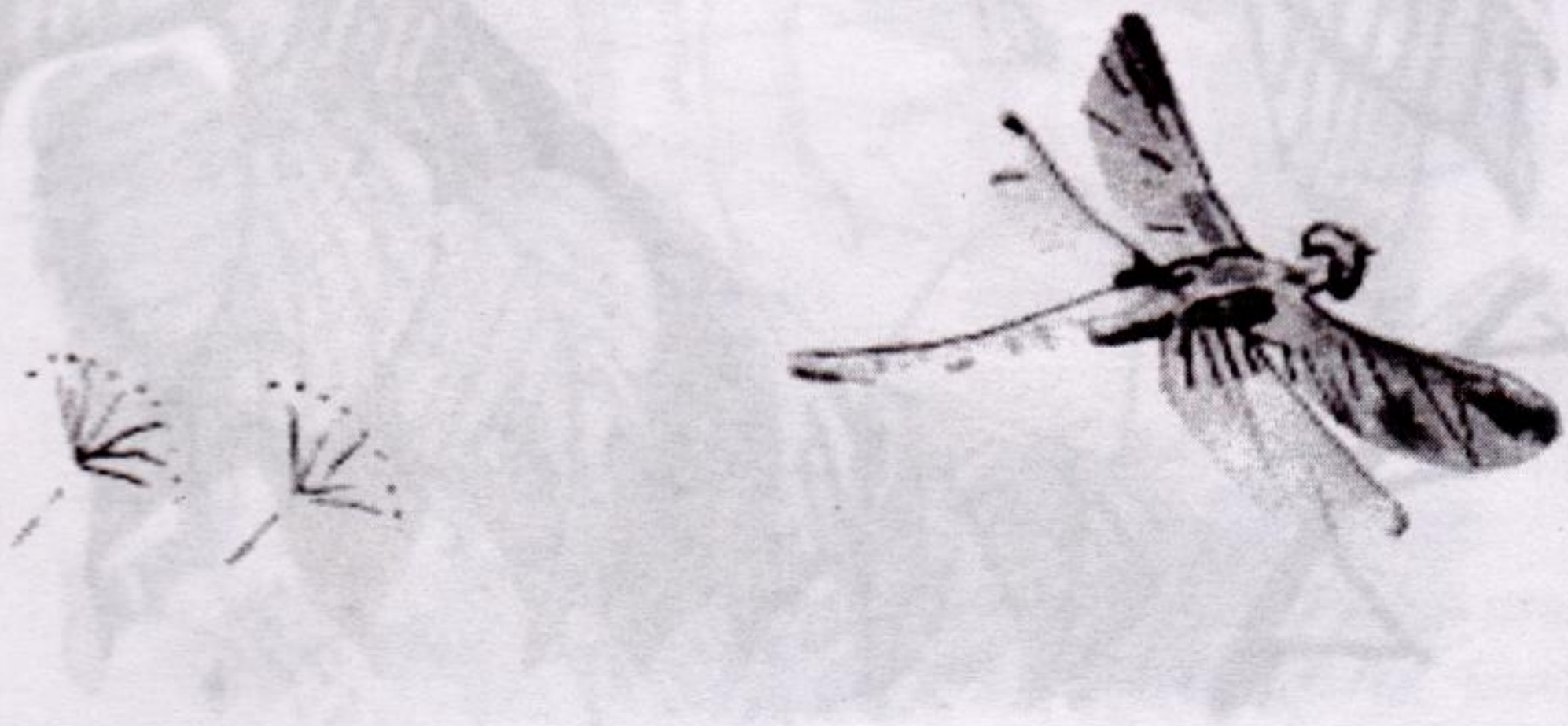

अन्तरिक्ष यात्री के लिए आ रहा था।

"जल्दी से, छिप जाओ, नहीं तो पंखे की हवा का झोंका तुम्हें बहुत दूर बहा देगा," अन्तरिक्ष यात्री ने कहा और चींटे को एक पत्थर के पीछे रख दिया।

हेलीकॉप्टर उड़कर दूर चला गया और इसके उड़ने के बाद जब हवा का खिंचाव ख़त्म हो गया, तो मुराश्का अपने पैरों से जितनी तेज़ी से भाग सकता था उतनी तेज़ी से भागकर अपनी बाँबी में गया ताकि सभी लोगों को अपनी असाधारण आकस्मिक मुलाक़ात के बारे में बता सके।

मुराश्का नाचता है

पता चला कि अन्तरिक्ष यात्री को मुराश्का के भाइयों-बहनों, दादा-दादियों, भतीजे-भतीजियों और चाचा-चाचियों ने भी देख रखा था। लेकिन उसकी उँगली पर बैठने और बातें करने का गौरव सिर्फ़ मुराश्का को ही मिला था। इस प्रकार, जबकि वह सिर्फ़ एक पूर्ण विकसित साधारण लाल चींटा था, दूसरे उसको बहुत सम्मान देने लगे। और जहाँ तक मुराश्का की बात है, उसने निश्चय किया कि वह वास्तव में अब कुछ है और वही करेगा जो उसे अच्छा लगता है। अब अगर उसे सबसे अच्छी अगर कोई चीज़ लगती थी तो वह था नाचना।

"वह ख़ुशी में नाच रहा है," दूसरी चींटों ने उसके प्रति सहानुभूति दिखाते हुए कहा। "उसे नाचने दो। और भी कोई होता तो वह ख़ुशी से झूम उठता।" उन्होंने सोचा

कि वास्तविकता समझने पर, मुराश्का ज़मीन पर आ जायेगा और वापस काम करने लगेगा।

लेकिन मुराश्का की वापस काम पर जाने की कोई मंशा नहीं थी। वह नाचने के अलावा कुछ नहीं करना चाहता था। दूसरे चींटे उससे नाराज़ हो गये। उस शाम को उन्होंने उसके लिए बॉबी के दरवाज़े बन्द कर दिये और उसे बाहर छोड़ दिया।

"अहा, अच्छा तो यह है तुम लोगों का असली रंग, है ना!" मुराश्का बन्द दरवाज़ों पर चिल्लाया। "ठीक है – अगर तुम लोग ऐसा ही चाहते हो तो। मैं अपनी खुद की बाँबी बनाऊँगा, तुम्हारी से बेहतर! अगर मैं चाहूँगा तो अपनी खुद की दुनिया तलाश लूँगा और वहाँ अकेले ही रहूँगा। अन्तरिक्ष यात्री ने इसके बारे में मुझे सब कुछ बता दिया है।"

"और अगर इस पर सोचा जाये," रात की ठिठुरन में थोड़ा काँपते हुए मुराश्का ने अपने आपसे कहा, "मैं अपने लिए अपनी खुद की एक धरती क्यों नहीं तलाश सकता?"

मुराश्का की नई दुनिया

अगली सुबह मुराश्का अपने लिए एक दुनिया चुनने के निकल पड़ा। उसे बड़े, खुले हुए धारियों वाले कद्दू का आकार ख़ास रूप से पसन्द आया। यह टहनियों से बनी बाड़ से लटका हुआ था और मुराश्का के लिए एक अलग-सी दुनिया की तरह था। वह कद्दू पर चढ़ गया और उसे लगने लगा कि इसके बग़ल की पली धारियाँ गेहूँ के खेत जैसी थी, हरी धारियाँ जंगल जैसी और सबसे ऊपर के छोटे-से सूराख में कुछ बारिश का पानी इकट्ठा हो गया था और वह उसे समुद्र जैसा लगा।

मुराश्का समुद्र के तट पर थोड़ा नाचा, फिर उसने आराम किया उसके बाद खोज के लिए भागा। उसने निश्चय किया कि वह अपनी इस नयी दुनिया के चारों ओर घूमकर यात्रा करेगा और देखेगा कि इसके निचले हिस्से में क्या है : शायद वहाँ पहाड़ होंगे या कोई मज़ेदार चीज़ होगी। लेकिन कद्दू के बग़ल के हिस्से बहुत चिकने और फिसलने वाले थे, और मुराश्का अपनी दुनिया से अचानक गिर गया और धप से ज़मीन पर आ उतरा।

"यह कैसे हो गया?" अपनी पीठ सहलाते हुए उसने सोचा। "अन्तरिक्ष-यात्री ने कहा था कि तुम ज़मीन पर से नहीं गिर सकते।"

फिर से मुराश्का मुश्किल से कद्दू पर चढ़ा। वह अपने सामने के पंजों में अपना सिर रखकर सोचना शुरू किया कि कैसे अपनी नयी बाँबी बनायी जाये।

वह सोच ही रहा था कि यह सब कैसे करना है तभी अचानक कद्दू काँपने लगा और भिनभिना उठा। "अरे!" मुराश्का ने सोचा, वह डरा था लेकिन रोमांचित फिर भी रोमांचित। "यह भूकम्प ही हो सकता है। मेरी दुनिया पूरी तरह से वास्तविक है।"

लेकिन यह कोई भूकम्प नहीं था। यह एक लड़का था जो कि कद्दू की क्यारी के पास से गुज़र रहा था और उसने अपनी गुलेल के पत्थर से कद्दू पर सीधा निशाना लगाया था।

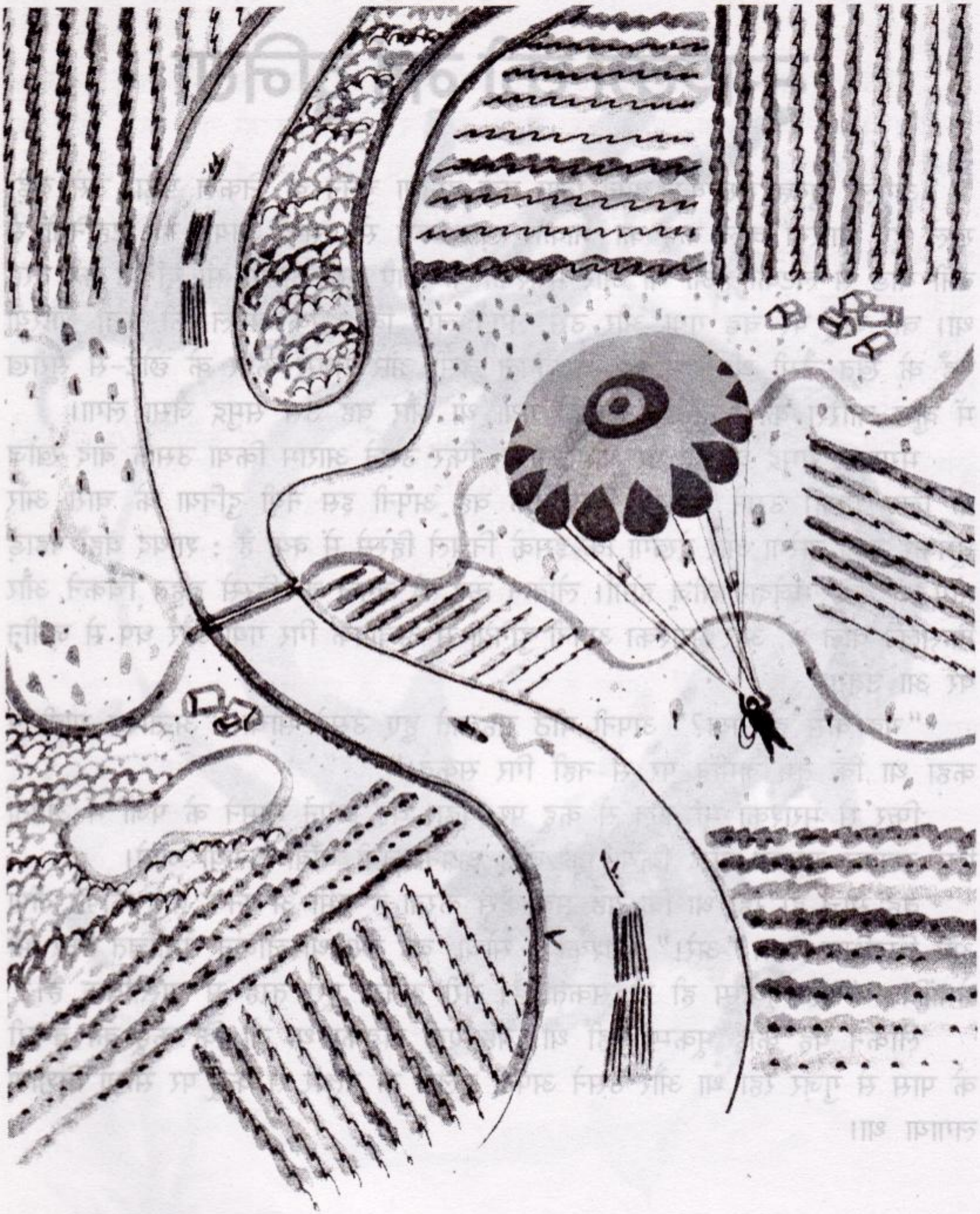

वे फिर मिलते हैं

दिन पर दिन बीतते गये। मुराश्का कद्दू के खेत में घूमा, दीवार पर चढ़ा, कभी-कभी तो भोजवृक्ष तक भी गया, लेकिन हमेशा छिपकर जिससे कि उसके सम्बन्धी उसे देख न सकें। अब वह कद्दू की दुनिया से उबने लगा, लेकिन उसके स्वाभिमान ने उसे चींटों की बाँबी पर वापस लौटने से रोक रखा। जबकि मुराश्का घर के बिना आवारा हो गया था। अब वह नाचता नहीं था; उसकी सारी प्रसन्नता चली गयी थी। इसके बजाय वह ईर्ष्या और नाराज़गी से भरा हुआ था। इसलिए जब उसने भोजवृक्ष के नीचे एक आदमी को देखा तो उसने सीधे यही सोचा कि, "मैं उसे काटूँगा। इससे वह कूदने लगेगा।"

चींटा आक्रोश से भरा था जैसे कि घास के गुच्छों से बाहर निकल रहा हो और हर पल उसका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था। "मैं उसकी नाक को काटूँगा!" उसने धमकाते हुए कहा।

बड़े अनुचित तरीके से, मुराश्का ने आदमी पर पीछे से हमला किया : कॉलर तक पहुँच गया, उसके कॉलर से गर्दन पर रेंग गया, गर्दन से गाल पर और गाल से नाक पर पहुँचा। फिर जैसे ही उसने तीखा डंक मारने के लिए खुद को ताना तो अपने आपको आदमी के अँगूठे और तर्ज़नी के बीच में पाया।

"अरे पुराने दोस्त!" मुराश्का ने आश्चर्य से भरी चीख़ सुनी। "तुम मेरी नाक पर क्यों टहल रहे हो?"

मुराश्का शर्म से बेदम हो गया : यह वही अन्तरिक्ष यात्री था जो उस सुबह वहाँ पहुँचा था।

वह तो ऐसे ही एक लाल चींटा था, लेकिन अब उसका रंग शर्म से चमकीला सिन्दूरी हो गया।

"न-नमस्ते!" वह हकलाया। "अ-आप दुबारा?"

"मैं इस जंगली मैदान को दुबारा देखना चाहता था," अन्तरिक्ष-यात्री ने जवाब दिया। मैं भोजवृक्ष को और आपको भी श्रीमान चींटे जी दुबारा देखना चाहता था। ज़मीन पर बार-बार आना हमारे दूसरे रोज़मर्रा के कामों की तरह नहीं है। मैं यहाँ आने के आनन्द को कभी नहीं भूलूँगा।" "और क्या पृथ्वी सचमुच एक कद्दू की तरह है?" कद्दू की दुनिया में अपनी दिक्कतों को याद करते हुए, मुराश्का ने पूछा।

"जैसा कि मैंने तुम्हें पहले भी बताया था। कद्दू की तरह, या एक गेंद, या फिर एक गुब्बारे की तरह। एक नीले गुब्बारे की तरह जो आकाश में उड़ता है।"

"और कोई भी उस पर से गिरता नहीं है?"

"नहीं कोई नहीं गिरता।"

"फिर मैं अपनी दुनिया से क्यों गिरा?" मुराश्का ने पूछा, और उसकी आवाज़ काँप रही थी।

मुराश्का की पूरी कहानी सुनने के बाद अन्तरिक्ष-यात्री ठहाका मारकर हँसने लगा।

"अरे, मित्र चींटें, हमारी यह धरती बहुत अनोखी है। अगर तुम्हें कोई बहुत ज़रूरी काम न हों तो, मैं तुम्हें कुछ किस्से सुनाऊँगा।"

"शुरू हो जाइये," मुराश्का ने कहा दरअसल वह बहुत दुखी था। "मुझे इस समय कोई बहुत ज़रूरी काम नहीं है।"

वह आराम से एक सफ़ेद बटन पर बैठ गया और सुनने के लिए तैयार हो गया।

पहला किस्सा

एक समय की बात है जब धरती पर सारी चीज़ें गिरती-पड़ती रहती थीं। नीचे की चीज़ें गिर जाती थीं और, कितनी अजीब-सी बात है कि, ऊपर की चीज़ें ऊपर गिरती थीं। वे तो बस चिड़ियों की तरह उड़ जाती थीं। कुत्ते अगर अपनी कुक्कुरशाला में ठीक से नहीं बँधे होते तो या तो उड़ जाते या गिर जाते। पके हुए सेब जो कि शहद या गिर जाते। पके हुए सेब जो कि शहद की तरह मीठे थे, गिरते और फिर सेब के पेड़ से उड़ जाते। सेबों को पकने से पहले इकट्ठा करना पड़ता था और वे बहुत खट्टे होते थे और बिल्कुल भी खाने लायक नहीं – ओह!

एक ख़ास तरह की रेलिंग लोगों के सहारे के लिए बनायी गयी थीं जब वे गलियों से गुज़रते तो इन्हीं पर लटकते हुए जाते थे।

किसी भी प्रकार की दुर्घटना को रोकने के लिए, उन लोगों के लिए ऊँचे-ऊँचे खम्भों पर हर गाँव व कस्बे में ऊपर जाल लगाये गये थे। जो लोग रेलिंग को पकड़ना भूल जाते थे ये जाल उनके लिए ही थे। खोये-खोये से रहने वाले लोग या तो ऊपर उड़ जाते थे या जाल में गिर पड़ते थे। फिर वे ज़मीन पर सीढ़ियों से उतरते थे और घरों में क्या होता था। कुर्सियाँ और मेज़ें, अगर मज़बूती से फ़र्श पर नहीं गाड़ी गयी होतीं तो, छत पर गिर जाती थीं।

जैसा कि तुम जानते हो, मुराश्का, उन दिनों लोगों के लिए पृथ्वी पर जीवन, आज तुम्हारे कद्दू पर रहने से ज़्यादा मुश्किल था।

और लोगों ने पृथ्वी से कहा : "हम जानते हैं कि तुम वास्तव में बहुत दयालु हो। कृपया कुछ ऐसा करो कि हमारा तुम पर से अचानक गिरना रुक जाये।"

"ठीक है," पृथ्वी ने जवाब दिया। "मैं हर चीज़ पर एक आकर्षित करने वाली शक्ति लगा दूँगी जैसे कि मैं एक चुम्बक होऊँ और तुम सब धातु के बने हो।"

पृथ्वी ने एक आकर्षण बल लगाया, लेकिन वह इतना तगड़ा था कि लोग ज़मीन से अपने पैर को उठा ही नहीं सकते थे; चिड़ियाँ छतों पर फँस गयीं और अपने पंखों को फड़फड़ा भी नहीं सकती थी; पेड़ों के ऊपरी हिस्से झुककर नीचे ज़मीन पर आ गये।

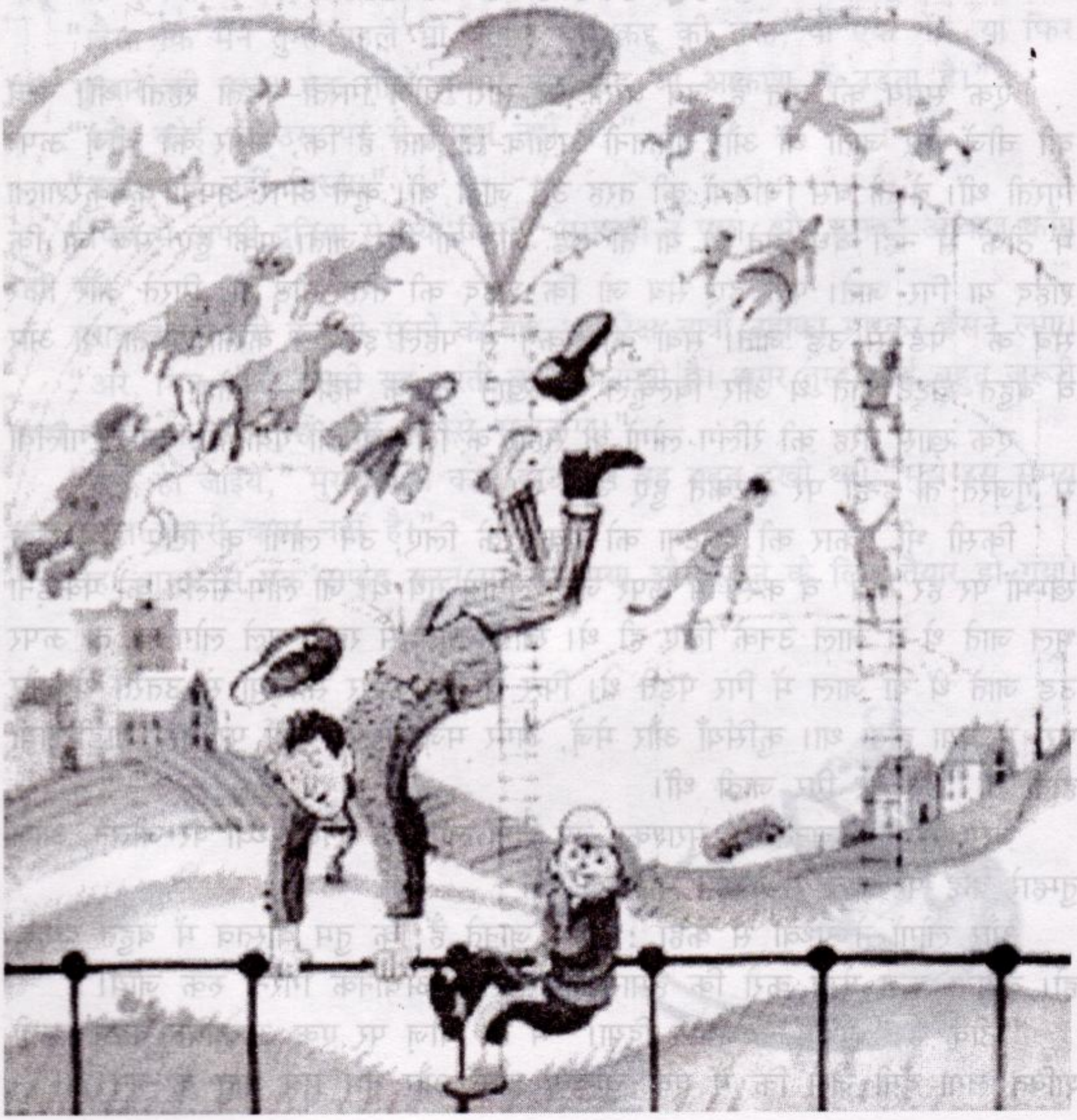

"अरे प्यारी, अरे प्यारी!" लोग चिल्लाये।

"तुम बहुत सख़्ती से खींच रही हो। कृपा करके थोड़ी और नरमी दिखाओ..."

पृथ्वी ने थोड़ी और नरमी से खींचा, जैसे कि अब करती है। और इसके बाद दुबारा कोई इस पर से नहीं गिरा।

दूसरा किस्सा

लेकिन फिर भी पृथ्वी पर चीज़ें पूरी तरह से ठीक नहीं हुयी थीं। और मुराश्का, मैं तुम्हें बताऊँगा कि ऐसा क्यों था। पृथ्वी वहाँ अन्तरिक्ष में लटकी हुयी थी, तुम्हारे कद्दू की तरह। और सूरज हमेशा एक ही तरफ़ प्रकाश देता था। तो एक तरफ़ हमेशा दिन का समय होता था, और दूसरी तरफ़ हमेशा रात होती थी।

धूप वाले हिस्से में कद्दू, नींबू, हिसालू थे, चिड़ियाँ गाती थीं, तितलियों की फड़फड़ाहट, खरगोशों और खरहों की उछल-कूद और खेल थे।

अँधेरे हिस्से में कुछ भी नहीं उगता था, डण्डेलियन भी नहीं। और वहाँ पर उल्लुओं के अलावा कोई नहीं रहता था। कभी-कभी बिल्लियाँ आतीं – क्योंकि बिल्लियों को अँधेरे में भी दिखता है। लेकिन वे भी बहुत जल्दी सूरज वाले हिस्से में अपनी अच्छी गरम जगहों पर वापस चली जातीं।

जब लोग सोने जाना चाहते थे तो उन्हें खिड़कियों पर भारी परदे लगाने पड़ते थे – अगर आँख में रोशनी की धारा आये तो नींद नहीं आ सकती। और कुछ लोग दूसरी पार रात वाले हिस्से में सोने के लिए चले जाते थे। और ज़ाहिर है कि वे वहाँ सोये रह जाते थे और उन्हें देर हो जाती – कुछ लोगों को कारखाने जाने में, कुछ को स्कूल जाने में। और बहुत सारे लोगों को तो अँधेरे में सिर पर ठोकरें लग जाती थीं।

इसलिए लोगों ने फिर से धरती से पूछा, "दयालु धरती माँ, क्या आप हमारे लिए घूम नहीं सकतीं?"

और पृथ्वी ने सूरज के सामने गोल-गोल घूमना शुरू कर दिया जैसे कि एक छोटी बच्ची अपनी मम्मी को नयी पोशाक दिखा रही हो। सूरज पहले उसके एक तरफ़ चमका, फिर दूसरी तरफ़।

मुराश्का, अभी हम जहाँ हैं, दिन का समय है। लेकिन दूसरी तरफ़ इस समय रात है और सभी लोग गहरी नींद सो रहे हैं : लोग और चींटे।

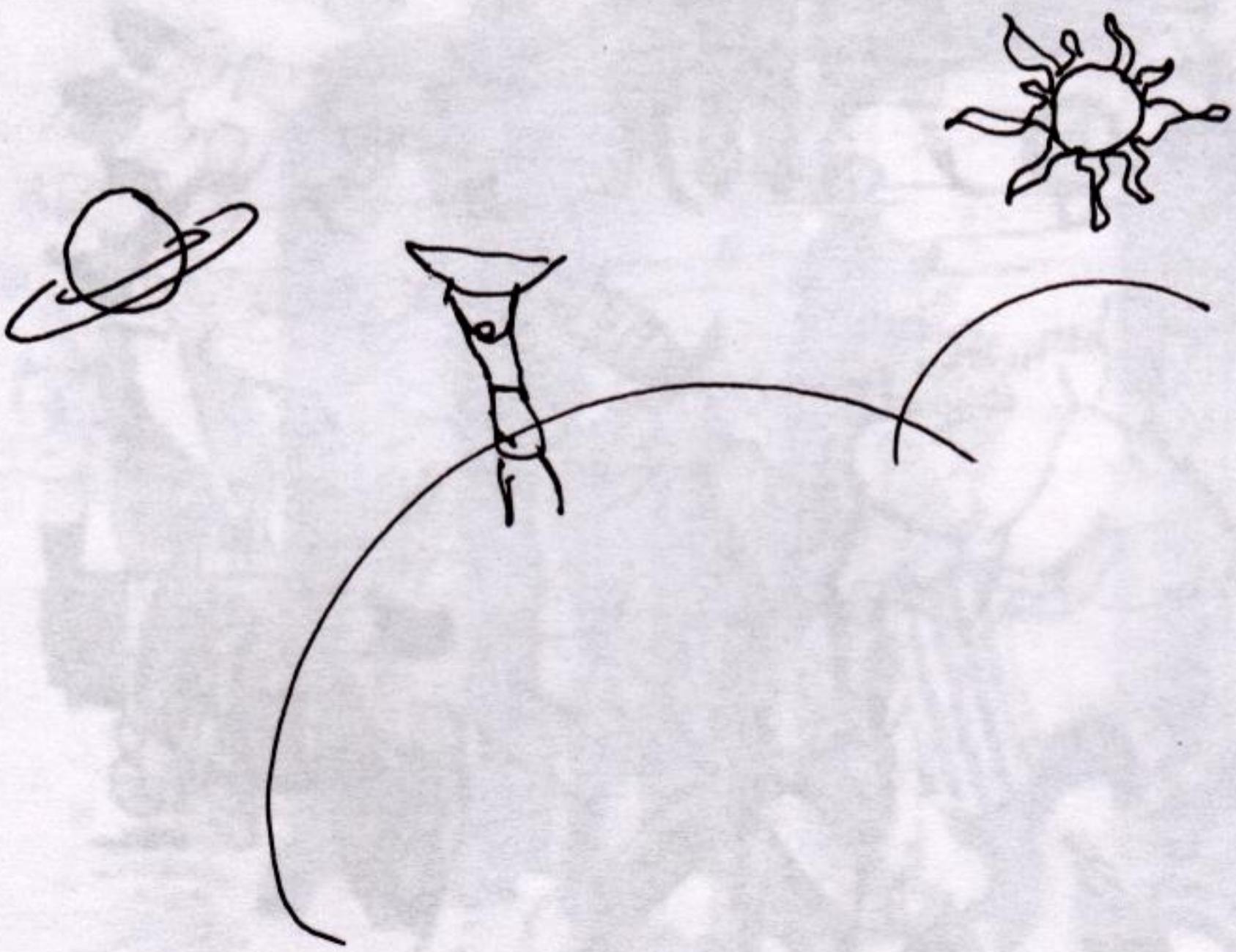

तीसरा किस्सा

फिर, मुराश्का, तुमने मुझे बताया कि एक पत्थर तुम्हारे कद्दू पर गिरा और तुम बाल-बाल बच गये। बहुत-से पत्थर हमारी पृथ्वी पर भी गरते थे। वहाँ ऊपर पूरे पत्थरों के बादल हैं, कभी-कभी, वे बाहरी अन्तरिक्ष में उड़ते हैं।

एक बार हमारी पृथ्वी ने लोगों को बताया : "मुझे ढँकने के लिए परदे की ज़रूरत है जिससे पत्थर मेरी बग़लों को छीलें नहीं। मैंने तुम लोगों के दो काम किये। कृपया अब तुम मेरे लिए कुछ करो, मुझे बचाने के कुछ तरीक़े सोचो।"

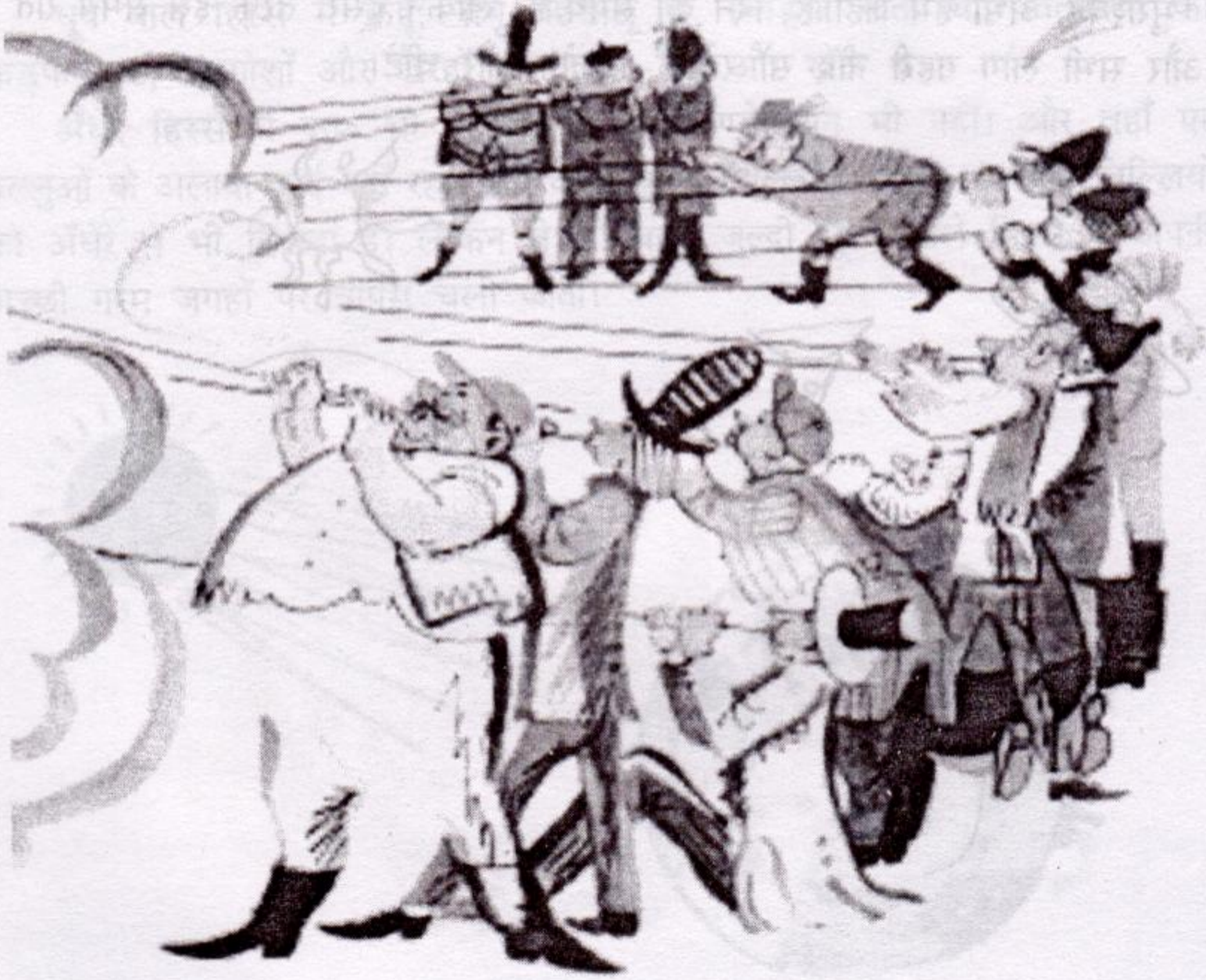

सबसे पहले काँच का सामान बनाने वालों ने कोशिश की। उन्होंने पृथ्वी को काँच से ढँक दियां लेकिन जैसे ही ऐसा हुआ और सब कुछ तैयार हो गया वैसे ही वहाँ पर काँच के टूटने से ज़ोर की गड़गड़ाहट हुयीं एक उल्का पिण्ड ने काँच में छेद कर

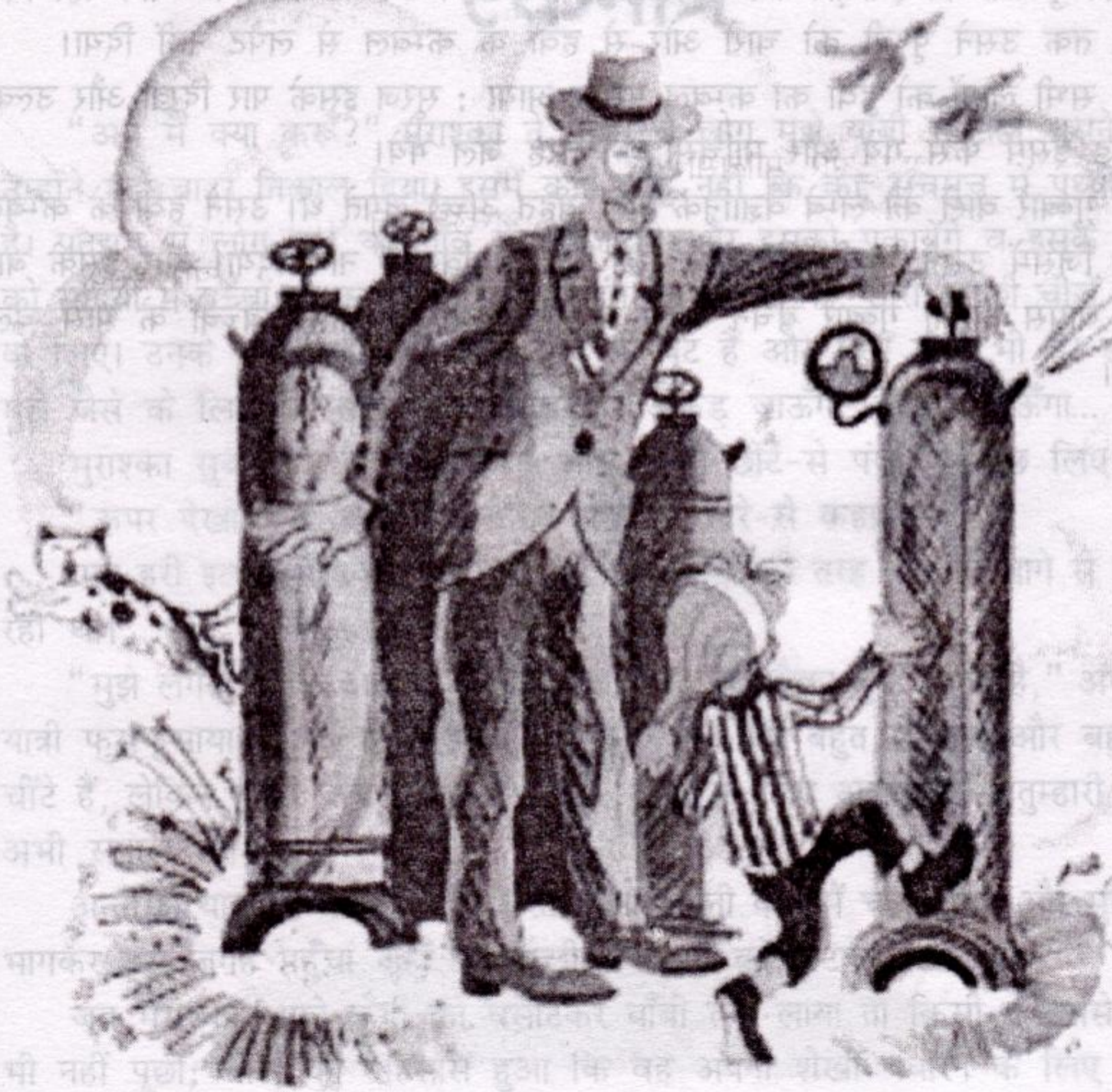

दिया था। सभी खिड़कियों की मरम्मत करने वाले नौसिखियों को इस काम पर काँच की मरम्मत के लिए लगाया गया। लेकिन जितनी तेज़ी से उन्होंने एक जगह पर उसकी मरम्मत कर डाली उतनी ही तेज़ी से लकड़ी का एक टुकड़ा अगले पर छिटक गया।

लोग निराश हो गये। वे धरती को लोहे से ढँककर अच्छा आवरण नहीं दे सकते थे। फिर तो सूरज को लोहे के आवरण से देखना सम्भव नहीं होता।

"मुझे कोशिश करने दो," एक आदमी ने कहा, जो गुब्बारे बेचता था, और उसने अपनी सारी टंकियों से संकुचित हवा को बाहर निकाल दिया। वहाँ लोगों की एक लम्बी कतार गुब्बारों का इन्तज़ार कर रही थी, लेकिन उसने उन पर तब तक ध्यान नहीं दिया जब तक उसने पृथ्वी को चारों ओर से हवा के कम्बल से लपेट नहीं दिया।

सभी लोगों को हवा का कम्बल पसन्द आया : सूरज इसके पार दिखा और उल्का पिण्ड इसमें फँस गये और माचिसों की तरह जल गये।

गुब्बारे वाले को लम्बे वैज्ञानिक शब्द बहुत अच्छे लगते थे। उसने हवा के कम्बल को, जिसमें उसने पृथ्वी को लपेट रखा था "पर्यावरण" नाम दिया। और इसके बाद वह वापस अपनी गुब्बारे बेचने वाली पुरानी नौकरी पर वापस बच्चों के पास चला गया।

एकमात्र

"अब मैं क्या करूँ?" मुराश्का ने पूछा। वे लोग मुझे बाँबी में नहीं घुसने देंगे, उन्होंने मुझे बाहर निकाल दिया। इसमें कोई शक़ नहीं कि कद्दू सचमुच में पृथ्वी नहीं है। पतझड़ में लोग कद्दू को गाँव में ले जायेंगे और इसको पकायेंगे व इसके बीजों को सर्दियों में बच्चों के कुतरने के लिए फ्राइंग पैन में तलेंगे।... सारी अच्छी चीज़ें बच्चों के लिए। उनके पास फ़र कोट और नमदे के बूट हैं और गरम टोपी भी है। लेकिन मुझे जैसे के लिए, मैं सर्दी, में बर्फ़ बनकर अकड़ जाऊँगा, मैं मर जाऊँगा...

मुराश्का सुबकने लगा और अपने आँसू अपने छोटे-से पंजों से पोंछ लिए।

"ऊपर देखो नन्हें चींटे," अन्तरिक्ष यात्री ने धीरे-से कहा।

एक हरी इल्ली भोजवृक्ष की शाखा से एक चाँदी की तरह चमकते धागे से लटक रही थी।

"मुझे लगता है कि अब चीज़ों को ठीक करने का मौक़ा तुम्हें मिला है," अन्तरिक्ष यात्री फुसफुसाया। "और सिर्फ़ इतना याद रखो कि यहाँ बहुत से लोग और बहुत से चींटे हैं, लेकिन पृथ्वी केवल एक है। चलो, अभी के लिए अलविदा – तुम्हारी खोज़ अभी सफ़ल हो!

अन्तरिक्ष यात्री लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ अपनी कार में चला गया। और मुराश्का भागकर उस जगह पहुँचा जहाँ पर इल्ली ने अपने को लटका रखा था।

जब मुराश्का अपने क़ैदी को घसीटकर बाँबी तक लाया तो किसी ने उससे कुछ भी नहीं पूछा; चींटों को अहसास हुआ कि वह अपनी शेखी बघारने के लिए पहले

ही काफ़ी सज़ा पा चुका है। लेकिन मुराश्का खुद इल्ली को घसीटकर भण्डार तक लाया, और बोला :

"यहाँ बहुत-से लोग और बहुत-से चींटे हैं – लेकिन पृथ्वी सिर्फ़ एक है।"

और फिर से चींटों ने कुछ नहीं कहा, क्योंकि वे शुरू से ही सब कुछ जानते थे।

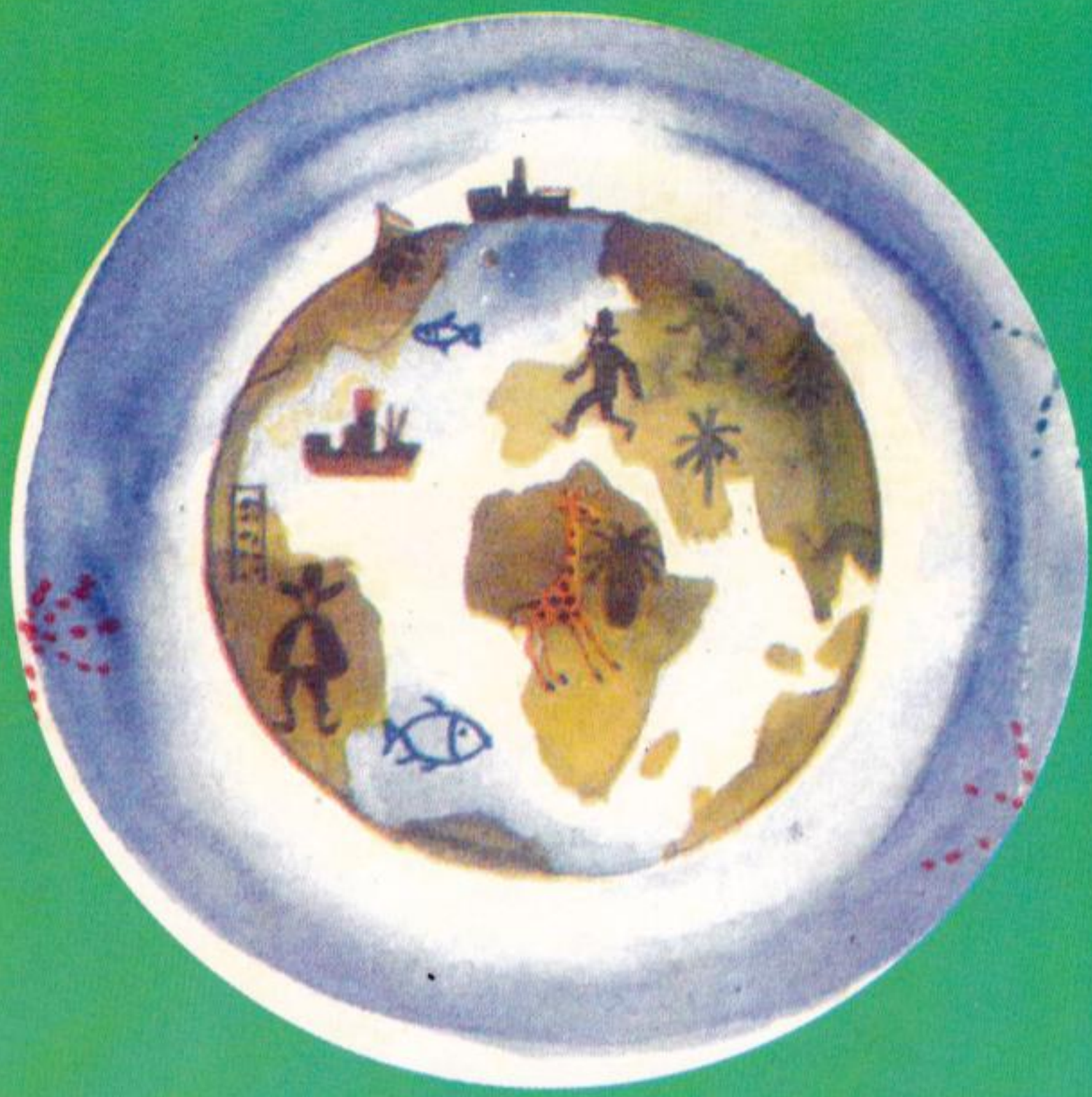

अनुराग ट्रस्ट
लखनऊ